Name-Bhawani
Sex-Female
D.O.B-04-03-2014

Name-Devi (Rajgir)
Sex-Female
D.O.B-04-03-2014

Name-Baghi
Sex-Female
D.O.B-13-03-2017

Name-Nakula
Sex-Male
D.O.B-23-03-2014

Name-Sangeeta
Sex-Female
D.O.B-12-09-2014

Name-Keshri
Sex-Male
D.O.B-25-05-2022

Name-Vikram
Sex-Male
D.O.B-25-05-2022

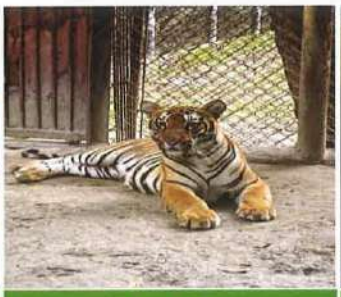

Name-Rani
Sex-Female
D.O.B-25-05-2022

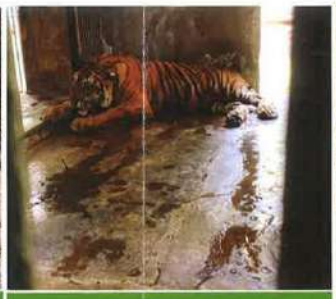

Name- Bagira (Rajgir)
Sex-Male
D.O.B-Unknow

हमारे चिड़ियाघर का
गौरव

बिहार सरकार

Meri LiFE
Lifestyle for Environment

पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग
बिहार सरकार

हमारे बाघ

संजय गाँधी जैविक उद्यान, पटना, बिहार

इतिहास

संजय गांधी जैविक उद्यान, पटना की स्थापना बिहार सरकार द्वारा एक वनस्पति उद्यान के रूप में की गई थी।

बिहार के तत्कालीन राज्यपाल महामहिम श्री नित्यानंद कानूनगो ने उद्यान की स्थापना के लिए वन विभाग को 34 एकड़ भूमि प्रदान की।

1972 में बिहार सरकार के वन विभाग द्वारा इसका नाम बदलकर जैविक उद्यान कर दिया गया।

जैविक उद्यान का क्षेत्रफल 153 एकड़ है।

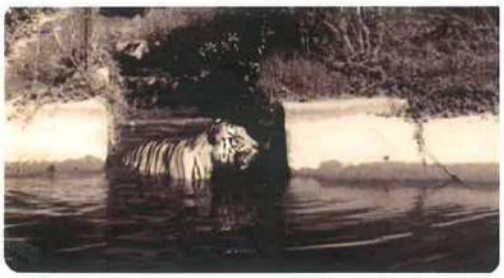

पटना चिड़ियाघर में बाघों का इतिहास

पटना ज़ू में बाघों के इतिहास का शुरुआत वर्ष 1975 से हुआ जब दिल्ली चिड़ियाघर से मोती नामक एक नर बाघ लाया गया था। वर्ष 1980 में असम सरकार की ओर से दो मादा बाघिन, "बल्बो रानी और फौजी" दिए गए थे। तदोपरान्त वर्ष 1983 में बाघों का प्रजनन प्रारंभ हुआ। प्रथम बार 01-01-1983 को 'बल्बो रानी' ने एक मादा बच्चे को जन्म दिया ।

इस चिड़ियाघर में जन्मे बाघों को राँची चिड़ियाघर को दिए गए हैं। बाघों के अन्तःप्रजनन को रोकने तथा वंशवृद्धि में सुधार के लिए अन्य चिड़ियाघरों जैसे शिवपुर, हैदराबाद तथा तिरूपति चिड़ियाघरों से बाघ मंगाए भी गए हैं।
हाल में बाघ की एक जोड़ी संगीता और नकुल चेन्नई चिड़ियाघर से मंगाए गये थे, जिससे 4 बच्चे पैदा हुये।

MASTER LAYOUT PLAN OF SANJAY GANDHI BIOLOGICAL PARK -PATNA

पटना ज़ू के 50 वी वर्षगांठ पर आइये मिलकर बाघों को संरक्षित करने का संकल्प ले।

इंजन सं. 73 जेड बी का अतीत और वर्तमान
कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

इंजन की कुल लम्बाई (बफर लेकर)	-	42 फीट 3/8 इंच
इंजन की चौड़ाई	-	8 फीट
गेज	-	2 फीट 6 इंच
कुल व्हील बेस	-	34 फीट 3 1/2 इंच
खाली वजन	-	34.1 टन
कार्यरत स्थिति में वजन	-	43.1 टन
अधिकतम ऊँचाई	-	10 फीट
85 प्रतिशत वायलर दबाव पर कर्षण बल	-	5.4 टन (औसत)

नैरो गेज वाष्प इंजन 73 जेड.बी. का फ्रांस तथा जर्मनी परिवार के इंजनों से संबंद्ध हैं, जिसे वर्ष 1953 में कॉरपेट लूवर सिएला कारनीव, सियन, फ्रांस द्वारा बनाया गया था। इस लोको का मूल नं. 1957 था जिसे बाद में स्टीम इंजन 305 कर दिया गया और उसके बाद से यह संख्या विद्यमान है। यह कंपनी द्वारा बनाये गए उन 20 इंजनों में से है, जिसमें 8 जेड बी. तथा 12 जेड ई. इंजन थे। उस समय इस इंजन की कीमत 1,61,276 रूपये थी। इसमें 2-6-2 की पहिया व्यवस्था है जिन्हें 2'6'' गेज पर द्रुत्वेग से चलने हेतु तैयार किया गया था। इस इंजन को मूलत: काले रंग से डब्ल्यू आर मार्का के साथ रंगा गया था।

इस इंजन को आरंभ में पश्चिम रेलवे, बड़ौदा मंडल के डाभोई स्थित नैरो गेज स्टीम लोको शेड (वर्तमान में वडोदरा मंडल) में रखा गया था। यह इंजन बडोदरा मंडल (पूर्ववर्ती बम्बई बडोदरा सेन्ट्रल इंडिया रेलवे) के पूरे नैरो गेज प्रणाली पर डाभोई-प्रतापनगर, डाभोई-छोटाउदेपुर, डाभोई-मियाँगाँव, प्रतापनगर-जम्बूसार सेक्शन आदि में पैसेंजर एवं मालगाड़ी दोनों में कार्य करता था। इस इंजन का अंतिम आवधिक ओवर हॉलिंग दिनांक 18.03.91 को प्रतापनगर कारखाना में किया गया। 31.03.1992 को स्टीम इंजनों को चरणबद्ध तरीके से हटाये जाने की प्रक्रिया के तहत बंद किए जाने समय यह कोसुम्बा शेड (गुजरात) में था। नैरो गेज सेक्शन में वाष्प चालित परिचालन समाप्त होने के बाद इस इंजन को मुख्य यांत्रिक इंजीनियर पश्चिम रेलवे के पत्र सं. 99/3 दिनांक 10.12.1993 के अनुसार हटा लिया गया। तत्पश्चात् वर्तमान गन्तब्य पर दिनांक 26.7.04 को भेजे जाने तक इसे पश्चिम रेलवे के प्रतापनगर कारखाना में रखा गया था।

रेल पटरियों पर जिस श्याम परी के चिकने चिरायु सौंदर्य ने बहुसंख्यक भारतीयों को 40 वर्षों तक चीते के समान उछलते- दौड़ते आनंद बिभोर किया, वह आज भी नि:संदेह, अनिर्धारित, बन्धनमुक्त......... कुलांचे भरने में सक्षम है।

संजय गाँधी जैविक उद्यान, पटना,
- एक परिचय -

संजय गाँधी जैविक उद्यान पटनावासियों के लिये एक आकर्षक स्थल है। यहाँ प्रति वर्ष दस लाख से अधिक दर्शक आते हैं। यह उद्यान प्रथम बार वर्ष 1969 में वनस्पति उद्यान के तौर पर 34 एकड़ भूमि पर विकसित किया गया था। वर्ष 1970 में राज्य सरकार के द्वारा 119 एकड़ भूमि हस्तान्तरित करने के पश्चात् इसे जैविक उद्यान के तौर पर विकसित किया गया। यह उद्यान भारत के 18 बड़े चिड़ियाघरों में से एक है। चिड़ियाघर में आने वाले लोगों के मन में वन्य प्राणियों के प्रति सहानुभूति पैदा करना तथा प्राकृतिक स्रोतों के संरक्षण और परिसंतुलन बनाये रखने की आवश्यकता के बारे में समझ बनाये रखना और जागरूकता विकसित करना जैविक उद्यान का मुख्य उद्देश्य है।

जैविक उद्यान में चिड़ियाघर के अतिरिक्त एक वनस्पति उद्यान भी है, जिसमें सैकड़ों प्रजाति के पेड़-पौधे हैं। यहाँ 80 से अधिक प्रजातियों के औषधीय पेड़-पौधे हैं जिनमें से 45 प्रजातियों के औषधिय पौधों का अलग से उद्यान है। उद्यान एक प्राकृतिक जंगल की तरह है जिसमें दर्जनों प्रजातियों के पक्षी एवं अन्य प्राणी खुले में विचरण करते हैं। चिड़ियाघर में 90 प्रजातियों के 900 से अधिक जानवर हैं। जानवरों में मुख्य प्रजातियाँ गेंडा, हाथी, दरियाई घोड़ा, जेबरा, संगाई डीयर, कृष्ण मृग, सांभर, चीतल, हॉग डीयर, श्वेत हिरण, चौसिंघा, बाघ, सफेद बाघ,, शेर, तेंदुआ, बादली तेंदुआ, शर्मीली बिल्ली, चीता बिल्ली, फिशिंग कैट, एमू, कैशवरी, सफेद मोर, देशी मोर, हिल मैना, धनेश, घड़ियाल इत्यादि है। जैविक उद्यान में एक बड़ा मछलीघर भी है जिसमें लगभग 40 प्रजातियों की मछलियाँ है। यहाँ एक साँपघर भी है।

जैविक उद्यान में दो कृत्रिम झीलें बनाई गयी हैं जो दर्शकों के लिये आकर्षण का केन्द्र है। उद्यान में शिशु रेल, शिशु उद्यान, नौकायन एवं हाथी सवारी की सुविधा भी उपलब्ध है। यह उद्यान पौलीथीन एवं धुम्रपान निषिद्ध क्षेत्र है। परिवार एवं समूह में आने वाले दर्शकों के लिये यहां रियायती टिकट की व्यवस्था भी है। नि:संदेह संजय गांधी जैविक उद्यान वर्त्तमान में केवल पटनावासियों के लिए अपितु बाहर से आने वाले दर्शकों के लिए भी एक महत्वपूर्ण व आकर्षक दर्शनिय स्थल है।

नैरो गेज वाष्प इंजन

पटना चिड़ियाघर का गेंडा

Concept & Publishing : P.R. Department, East Central Railway, Hajipur
Design & Printing : Snappers Advt. & MKTG. (P) Ltd. Phone : 0612 - 2234852, 2220912

भारतीय रेल का अनोखा उपहार

भारतीय रेल द्वारा

संजय गांधी जैविक उद्यान को प्रदत्त

नैरो गेज वाष्प इंजन का

श्रीमती राबड़ी देवी

माननीया मुख्यमंत्री, बिहार, द्वारा

अनावरण

मुख्य अतिथि

श्री लालू प्रसाद

माननीय रेल मंत्री, भारत सरकार

अध्यक्षता

श्री जगदानन्द

माननीय मंत्री, पर्यावरण,
वन एवं जल संसाधन, बिहार सरकार

रविवार, 15 अगस्त 2004
अपराह्न 03.00 बजे

पूर्व मध्य रेल
सेवा एवं विकास के लिए सदा तत्पर

संजय गांधी जैविक उद्यान

बिहार का राजकीय पक्षी गौरैया

दिखने में छोटी और मोटी सी, भूरे-भूरे रंगों वाली, छोटी पूँछ, लेकिन शक्तिशाली चोंच की मालकिन। घरों के बारामदों में इसकी चहचहाहट से ही 'गौरैया' के होने का आभास हो जाता है। इन्हें 'लिटिल ब्राउन जॉब्स' के नाम से भी जाना जाता है। कई प्रजातियों वाली यह पक्षी आमतौर पर आजादी (स्वतंत्रता) का प्रतीक मानी जाती है।

अक्सर गौरैयों को एक छोटी पक्षी मान लिया जाता है, लेकिन सच तो यह है कि वे बहुत हिम्मती होती है। आकार में छोटापन का इन्हें फायदा मिलता है। गौरैया अपने स्वभाव के अनुरूप घरों की खिड़कियों से प्रवेश करने की कोशिश करती है इस कवायद में सफलता के लिए वह खिड़कियों में शीशे पर प्रहार भी करती है और घरों में छोटी डंडियों से घोंसला बनाती है।

20 मार्च को 'विश्व गौरैया दिवस' घोषित किया गया, लेकिन कुछ लोगों के जेहन में यह सवाल उठता है कि सिर्फ गौरैया को लेकर ही ऐसा फैसला क्यों लिया गया। इसका जवाब लंबा और घुमावदार जरूर है, साथ ही दिलचस्प भी। गौरैया का वैज्ञानिक नाम 'पेसर डोमेस्टिक्स' दिया गया है। और इस प्रजाति की पक्षी का इंसानों के साथ पुराना और घनिष्ठ संपर्क रहा है। इसमें नर प्रजाति की गौरैया गहरे रंग वाली और काले विव वाली होती है, जबकि मादा प्रजाति की गैरैया सामान्यतया भूरे रंग की होती है।

यह अपने तरह की ऐसी अनोखी पक्षी है, जिसे गाँव और शहर में बच्चे पहली नजर में ही पहचान लेते हैं। स्वंयसेवकों और संगठनों द्वारा कई स्थानों पर कराई गई गिनती में एक डरावना निष्कर्ष सामने आया है, जो इस ओर इशारा करता है कि गौरैयों की संख्या में गिरावट आ रही है। इसे लुप्तप्राय प्रजातियों में शामिल किया गया है और ऐसा संभव भी है कि आने वाले समय में इस पक्षी के लिए हम 'एक समय की बात है' जैसे शब्दों का उपयोग करने लगें और यह किस्सागोई का हिस्सा भर रह जाए।

शहरी इलाकों में इसकी संख्या में ज्यादा गिरावट दर्ज की गई है। बिल्लियाँ और कौवे इन्हें अपना शिकार आसानी से बना रहे हैं। बाड़े और उद्यान की कमी से इनको नस्ल नहीं पनप पा रही है। भोजन की कमी विशेष रूप से कीड़ों की कमी खतरे का सूचक हैं, क्योंकि ये युवा पक्षियों को बढ़ाने में सहायक होते हैं।

गौरैयों में आ रही गिरावट

गौरैया को दाना देकर, उनके लिए बाहर पानी की व्यवस्था कर, घर की स्थापना करके और इसे बढ़ावा देकर हम उनका संरक्षण कर सकते हैं। ऐसा होने पर वे सुरक्षित घोंसला बना सकेंगी। और उनकी मदद करके आप कहीं न कहीं से पर्यावरण की मदद कर रहे होते हैं। जाने अनजाने में आप नेचर हीरो बन जाते हैं। इसलिए उनके बुरे वक्त में इन बातों को ठंडे बस्ते में डालने का समय नहीं है, बल्कि आप उनकी सहायता करके उनके पंखों को नई उड़ान भरने में मदद कर सकते हैं।

- दिलचस्प बातें -

* गौरैया शिथिल पत्लिक होती हैं। नर और मादा दोनों हीं बच्चों का ख्याल रखते हैं। हालांकि मदाओं में यह सोच प्रबलता के साथ दिखाई देती है।

* आमतौर पर गौरैया जमीन पर घूमने के क्रम में फूदकती या कूदती है। उम्रदराज गौरैयों को ही बमुश्किल से चलते देखा जाता है।

* ये पक्षी आक्रामक और सामाजिक होते हैं। दूसरे पक्षियों से प्रतिस्पर्द्धा के कारण यह भूमीका और उभर जाती है।

* नर और मादा गौरैया में सबसे बड़ा अंतर यह होता है कि नर गौरैया का पीठ लाल होता है और उसपर काला विवहोता है, जबकि मादा गौरैया में आँख की पट्टी के साथ उसका रंग भूरा होता है। वे हर ब्रिडिंग सीज़न में मिलते हैं और फिर एक समूह में जीवन गुजारते हैं।

* गौरैया तीन घोंसलों में 3-5 अंड़े देती है। नर और मादा दोनों ही 12-15 दिनों तक अंड़ों को सेते (इंक्यूबेट) करते हैं। पक्षी के ये छोटे बच्चें 15 दिनों के बाद बाहर उड़ पाते हैं।

* नन्हें मेहमानों के लिए बिल्लियाँ मुख्य तौर पर खतरे का सूचक होती हैं। पक्षियों के घोंसले को छोड़ने के बाद बिल्लियाँ उन अनुभवहीन गौरैयों को अपना शिकार बना लेती हैं। हालांकि वे खतरे से बचने के लिए पानी में तैर सकती है, बावजूद इसके इन्हें जलीय पक्षियों में शामिल नहीं किया जाता हैं।

* यह पक्षी 12 साल तक जीवन जीते हैं। अभी तक सबसे ज्यादा कहीं भी जीने वाली गौरैया की अधिकतम उम्र 15 साल और 9 महीने दर्ज की गई है।

* गौरैया जब परेशान होती है, तो तनाव को कम करने के लिए अपने पूंछ को झटका देती है। 500 शोध पत्रों के माध्यम से इस प्रजाति पर वैज्ञानिक तरीके से अध्ययन करके इनके बारे में जानकारी प्रकाशित की गई है।

गौरैयों से चहके घर-आँगन

गौरैया हमारी चिरैया

आओ गौरैया बढ़ाएं।

अपनी गौरैया (घर की गौरैया)

बिहार सरकार

पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग

गैंडा

गैंडा का वर्गीकरण :
Family: Rhinocerotidae
Order: Perissodactyla (odd-toed ungulate)
Kingdom: Animalia

एवं अपने साथ एक मादा शिशु भी लाई थी। गैरी ने 2009 में एक नर गैंडा को जन्म दिया। वर्ष 2011 में भी उद्यान में तीन गैंडों का जन्म हुआ।

गैंडों के बाड़ा में प्राकृतिक वातावरण के साथ नाईट हाउस तथा कीचड़युक्त मोट उपलब्ध है जिससे कि वह अपने संवेदनशील त्वचा की रक्षा करता है। बाड़ों में पीने हेतु स्वच्छ पानी उपलब्ध है। सभी बाड़ों को एक कॉरिडोर से जोड़ा गया है जिसमें काफी पेड़-पौधे हैं तथा विचरण हेतु पर्याप्त स्थान उपलब्ध है। उद्यान के पास अब गैंडों की चार ब्लड-लाईन उपलब्ध है जो शायद ही दुनिया के किसी चिड़ियाघर में उपलब्ध हो।

संरक्षण स्थिति (Conservation Status)

IUCN के रेड लिस्ट के अनुसार भारतीय गैंडा ''असुरक्षित'' श्रेणी (Vulnerable category) में है, जबकि इसे 2006 से ''लुप्तप्राय'' श्रेणी (Endangered category) में शामिल किया गया है। यह CITES के परिशिष्ट – I में सूचीबद्ध है। साथ ही भारतीय गैंडा को वन्यप्राणी (संरक्षण) अधिनियम 1972 के तहत अनुसूची –I में रखा गया है। इसके बचाव के लिए हुए कई कार्यक्रमों के बाद इसकी स्थिति में (खासकर भारत में) बेहतर परिणाम देखने को मिले हैं।

क्रम सं.	नाम	जन्म	उम्र	लिंग
1.	हड़ताली	08.07.1988	28	मादा
2.	रानी	06.07.1991	25	मादा
3.	अयोध्या	27.12.1992	24	नर
4.	गौरी	08.08.2002	14	मादा
5.	गणेश	19.09.2004	12	नर
6.	लाली	03.12.2005	11	मादा
7.	शक्तिराज	30.10.2007	9	नर
8.	एलेक्सन	06.04.2009	7	मादा
9.	जम्बो	11.11.2011	5	नर
10.	विद्युत	06.09.2013	3	नर

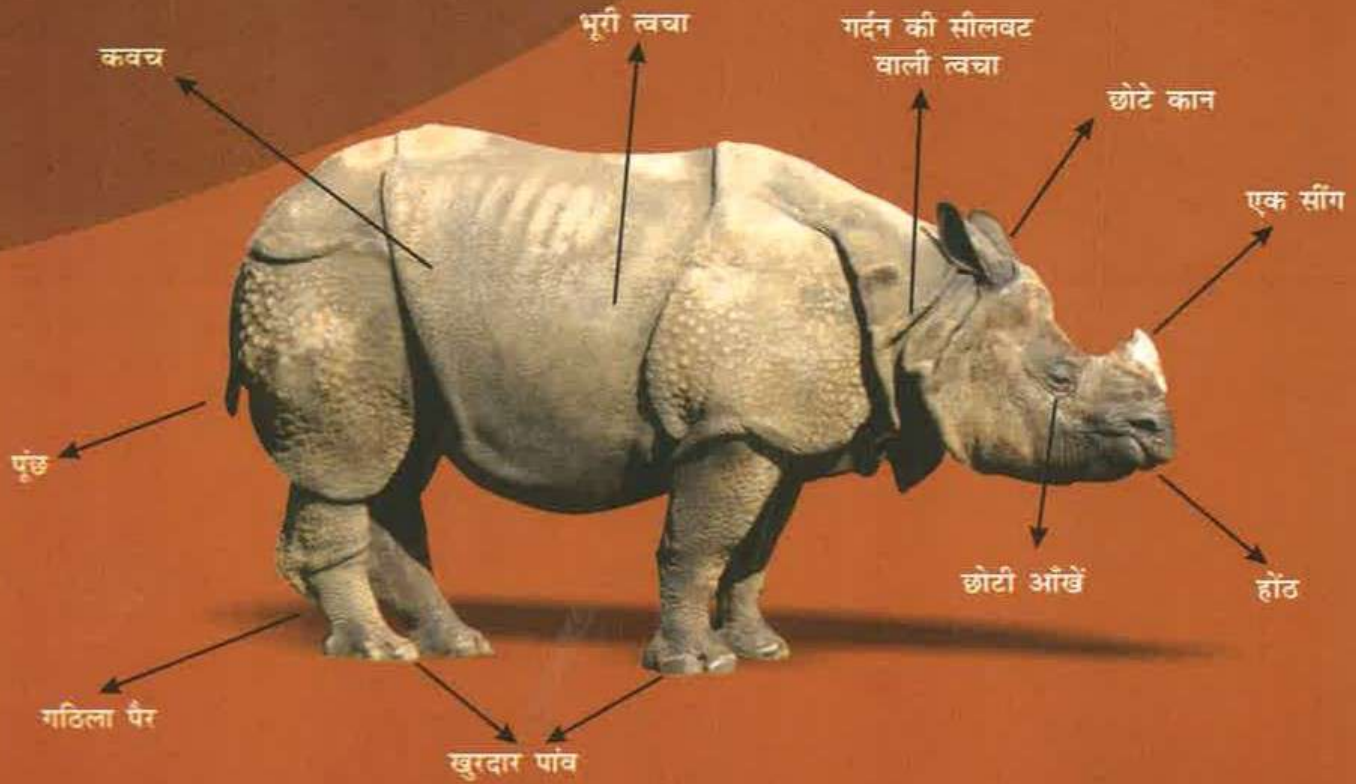

एक सींग वाले गैंडा (भारतीय गैंडा) की रूपात्मक विशेषताएं :

लम्बाई	:	नर – 369 से 370 से.मी. मादा – 310 से 340 से.मी.
कंधे की ऊंचाई	:	नर– 170 से 193 से.मी. मादा – 148 से 173 से.मी.
पूंछ	:	70 से 80 से.मी.
वजन	:	नर – 2200 किलो., मादा – 1600 किलो.
सींग की लम्बाई	:	अधिकतम 521 मि.मी.
रंग	:	भूरा

गैंडा

गैंडा

परवा चिड़ियाघर का

Present and Historical Distribution of India Rhinoceros in the wild

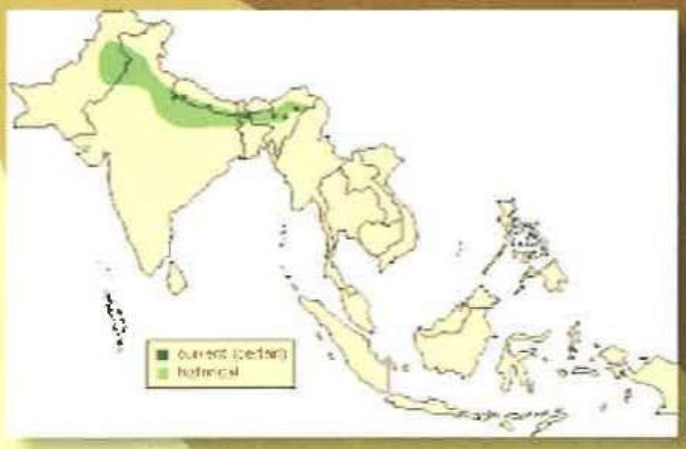

Global Distribution and numbers of Rhino Species

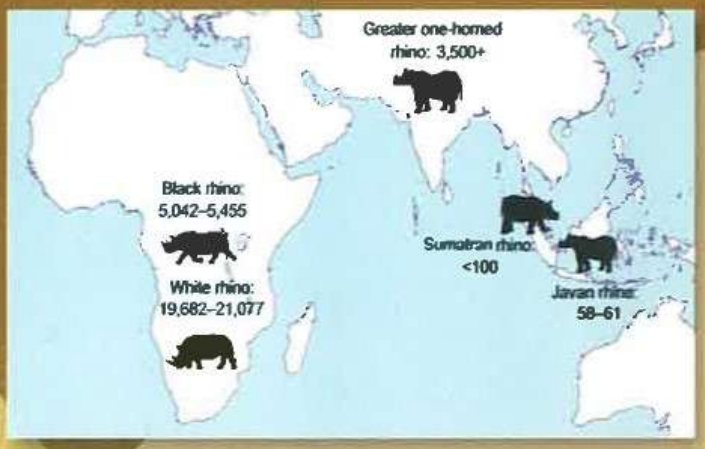

गैंडे की पांच प्रजातियाँ

1. भारतीय गैंडा *(Rhinoceros unicornis)* कुल संख्या 3500
2. सफेद गैंडा *(Ceratotherium Simum)* कुल संख्या 20405
3. काला गैंडा *(Diceros bicornis)* कुल संख्या 5055
4. सुमात्रण गैंडा *(Dicerorhinus sumatrensis)* कुल संख्या 100
5. जावन गैंडा (Rhinoceros sondaicus) कुल संख्या 35–44

पारिस्थितिकी (Ecology)

एक सींग वाले गैंडा (भारतीय गैंडा) उत्तर-पूर्व भारत एवं दक्षिण नेपाल में बहुतायत में पाए जाते हैं । ये नदियों के किनारे घास के मैदानों में रहना पसंद करते हैं। इनका मुख्य भोजन घास, नदियों के किनारे उगे झाड़ियाँ एवं जलीय पौधे भी हैं।

लम्बी उम्र (Longevity)

जंगल में भारतीय गैंडा की अधिकतम आयु 40 वर्ष की होती हैं, वहीं चिड़ियाघर जैसे संरक्षित स्थानों में ये अधिकतम 47 साल की उम्र तक जीवित रह पाते हैं।

प्रजनन (Reproductive Biology)

नर भारतीय गैंडा लगभग 10 साल की उम्र में प्रजनन योग्य हो जाते हैं, वहीं मादा 5-7 साल की उम्र में प्रजनन योग्य होती हैं। प्रत्येक 5-8 सप्ताह में 24 घंटो के लिए प्रजनन हेतु तैयार

हो जाती हैं। सामान्यत: मादा गैंडा एक बार में एक बच्चे को जन्म देती है तथा 18 से 20 महीने में दूसरे बच्चे के जन्म के लिए तैयार हो जाती है। बच्चे को संभालने व परवरिश के लिए मादा तथा अपने आधिपत्य क्षेत्र की रक्षा के लिए नर गैंडा हमेशा तैयार रहते है।

रोचक तथ्य (Interesting Facts)

- गैंडे की त्वचा सूरज की तीखी रौशनी से जलने लगती है, जिसके बचाव के लिए ये ठन्डे पानी में बैठना पसंद करते हैं ।
- बच्चा पैदा करने के शुरूआती कुछ हफ्तों में मादा गैंडा 18 से 25 लीटर दूध रोजाना देती है।
- गैंडे का बच्चा जन्म के पहले दिन से ही पानी में अच्छी तरह तैर सकता है।
- गैंडा 48 किलोमीटर प्रति घंटे की अधिकतम रफ्तार से दौड़ सकते हैं।
- गैंडे के शरीर पर बाल नहीं होते हैं।

विश्व गैंडा दिवस/World Rhino Day

22nd September

वर्ष 2016 में World Wildlife Fund - South Africa के द्वारा विश्व गैंडा दिवस मनाने की योजना बनाई गई। तत्पश्चात वर्ष 2011 में जिम्बाबवे तथा अन्य देश के लोगों ने भी विश्व गैंडा दिवस पर बल दिया तथा इसे मनाया गया। इसके उपरान्त 22 सितम्बर को विश्व के अन्य देशों में भी सरकार तथा संस्थानों के द्वारा विश्व गैंडा दिवस मनाया जाने लगा। हमें भी इस दिन गैंडा जैसे बहुमूल्य प्राणी के संरक्षण तथा संवर्द्धन में अपना योगदान देना चाहिए।

पर्यावरण एवं वन विभाग, बिहार सरकार

संजय गाँधी जैविक उद्यान, पटना

बिहार सरकार

गैंडा

पटना चिड़ियाघर का

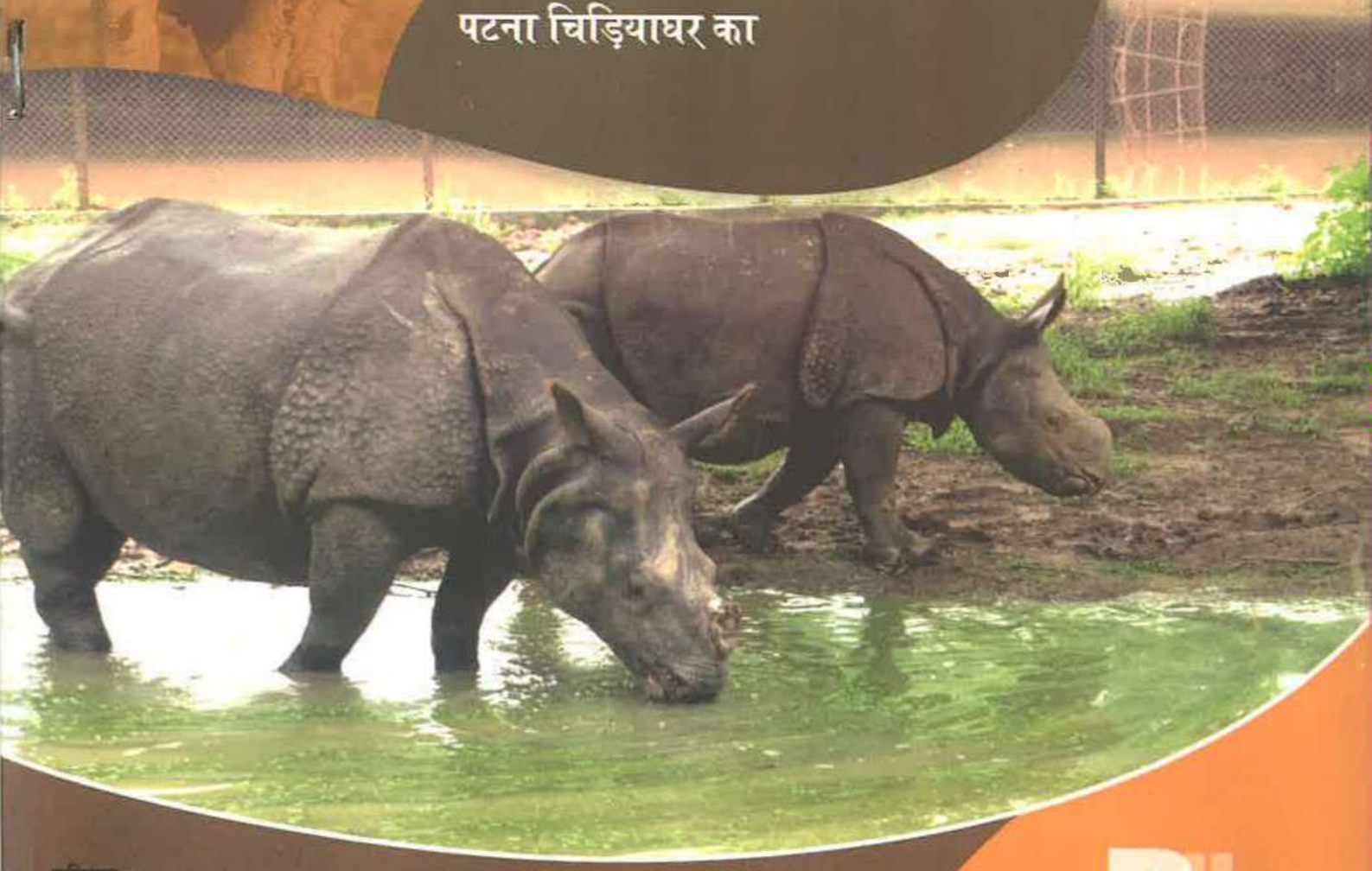

परिचय :

एक सींग वाले गैंडा (One-Horned Rhinoceros: *Rhinoceros unicornis*) जिसे भारतीय गैंडा भी कहते हैं, जंगल में रहने वाले विश्व के सबसे बड़े स्थलीय जीवों में से एक है। इसके नाम Rhinoceros में "Rhino" का मतलब नाक एवं "Ceros" का मतलब सींग होता है, यानि नाक के ऊपर सींग वाला जानवर। वहीं इसके लैटिन नाम "Unicornis" जिसमे "Uni" यानि एक और "Cornis" यानि सींग अर्थात एक सींग वाला जानवर।

RHINO

संजय गाँधी जैविक उद्यान, पटना में गैंडा का संक्षिप्त इतिहास

सर्वप्रथम 28-05-1979 को असम से एक जोड़ा भारतीय गैंडा संजय गाँधी जैविक उद्यान, पटना में लाया गया। लाये गये जोड़ा में नर ''कांछा'' की उम्र लगभग दो वर्ष एवं मादा ''कांछी'' की उम्र लगभग 5 वर्ष थी। तीन वर्ष बाद 28-03-1982 को तीसरा गैंडा (नर) 'राजू' बेतिया से राहत एवं बचाव कार्यक्रम के तहत् उद्यान को प्राप्त हुआ जिसकी उम्र लगभग एक वर्ष थी। उद्यान के प्राकृतिक वातावरण एवं उत्कृष्ट प्रजनन नीतियों तथा बेहतर रख-रखाव के कारण राजू एवं कांछी के मिलन से उद्यान को दिनांक 08-07-1988 को अनमोल तोहफा के रूप में एक मादा गैंडा मिला। यह सिलसिला राजू एवं कांछी द्वारा पुनः दोहराया गया, फलस्वरूप 08-07-1991 को एक मादा गैंडा का जन्म हुआ जिससे उद्यान प्रशासन को यह एहसास हो गया कि इस उद्यान में गैंडा प्रजनन हेतु अनुकूल वातावरण है। वर्ष 1991 में कुल गैंडों की संख्या 05 हो गई जो कि उद्यान के लिए एक गौरव की बात थी। बिना किसी बाह्य सहायता के उद्यान के पदाधिकारियों एवं कर्मचारियों की लगनशीलता से गैंडा प्रजनन कार्य प्रगति के पथ पर अग्रसर होने लगा। गैंडा प्रजनन में इस बात का सदा ध्यान रखा जाने लगा कि अन्तः प्रजनन न हो।

असम से प्राप्त नर गैंडा ''कांछा'' एवं लगभग 18 वर्ष की उम्र में ''कांछी'' के मिलन से वर्ष 1993 में एक नर गैंडा का जन्म हुआ। वर्ष 1988 में उद्यान में जन्मी मादा (हड़ताली) ने 09 वर्ष की उम्र में वर्ष 1997 में एक नर गैंडा को जन्म दिया। हड़ताली ने वर्ष 2012 तक कुल आठ गैंडों को जन्म दिया है।

अदला-बदली कार्यक्रम के तहत् अन्य चिड़ियाघर दिल्ली, कानपुर, राँची, हैदराबाद एवं यू.एस.ए.) को गैंडे उपलब्ध कराने के बावजूद आज भी संजय गाँधी जैविक उद्यान में गैंडों की संख्या 10 है जिनमें 5 नर एवं 5 मादा हैं। उद्यान ने गैंडा संरक्षण के मामले में एक अलग पहचान बनाई है।

नस्ल की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए अदला-बदली कार्यक्रम के तहत दिल्ली चिड़ियाघर से एक नर गैंडा (अयोध्या) वर्ष 2005 में तथा वर्ष 2007 में 'सैनडियागो जू, कैलिफार्निया, यू. एस.ए. से एक मादा गैंडा (गैरी) मंगायी गई। गैरी गर्भवती थी

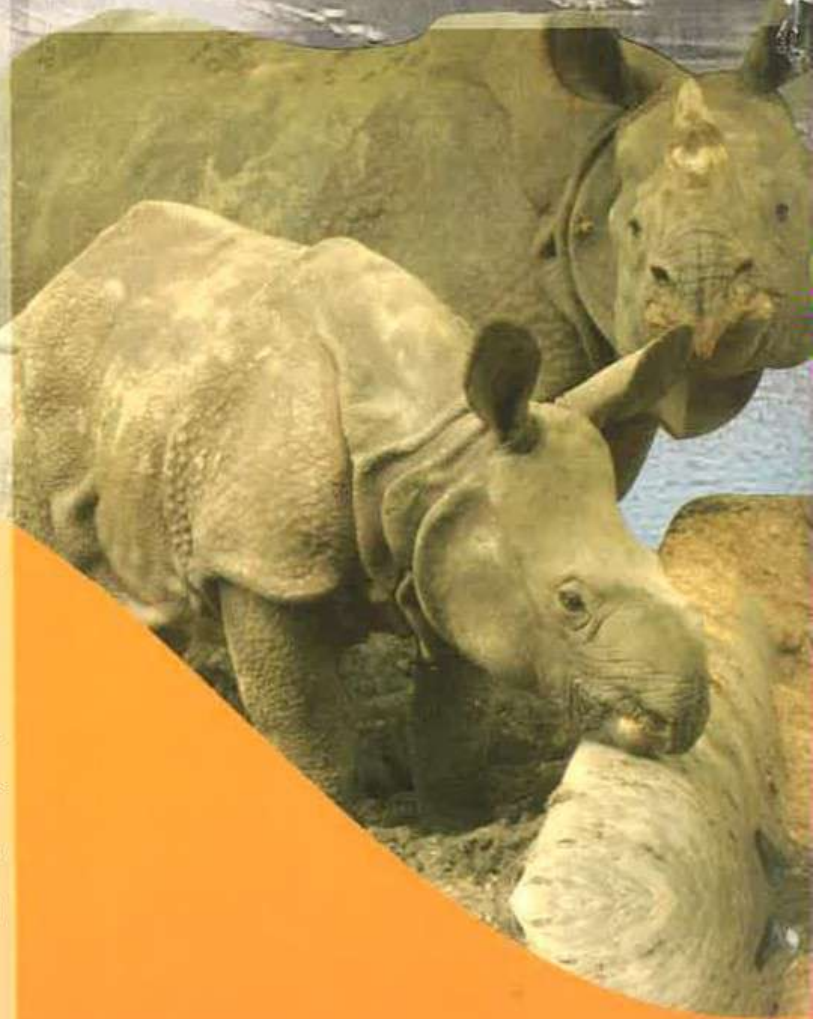

पांच प्रजातियाँ

दुनिया में रहने वाले गैंडे की पांच प्रजातियों के नाम इस प्रकार है :

भारतीय गैंडा (INDIAN RHINOCEROS)
(Rhinoceros unicornis)

Approximate 3500 are surviving.

सफेद गैंडा (WHITE RHINOCEROS)
(Ceratotherium simum)

Near Threatened, about 20405 are surviving

काला गैंडा (BLACK RHINOCEROS)
(Diceros bicornis)

Critically Endangered, about 5055 are surviving now.

सुमात्रण गैंडा (SUMATRAN RHINOCEROS)
(Dicerorhinus sumatrensis)

Fewer than 100 rhinos are believed to survive on the island of Sumatra with likely fewer than 10 animals remaining in Subah, Malaysia

जावन गैंडा (JAVAN RHINOCEROS)
(Rhinoceros sondaicus)

About 35-44 are surviving now, Found only in Indonesia

गैंडा

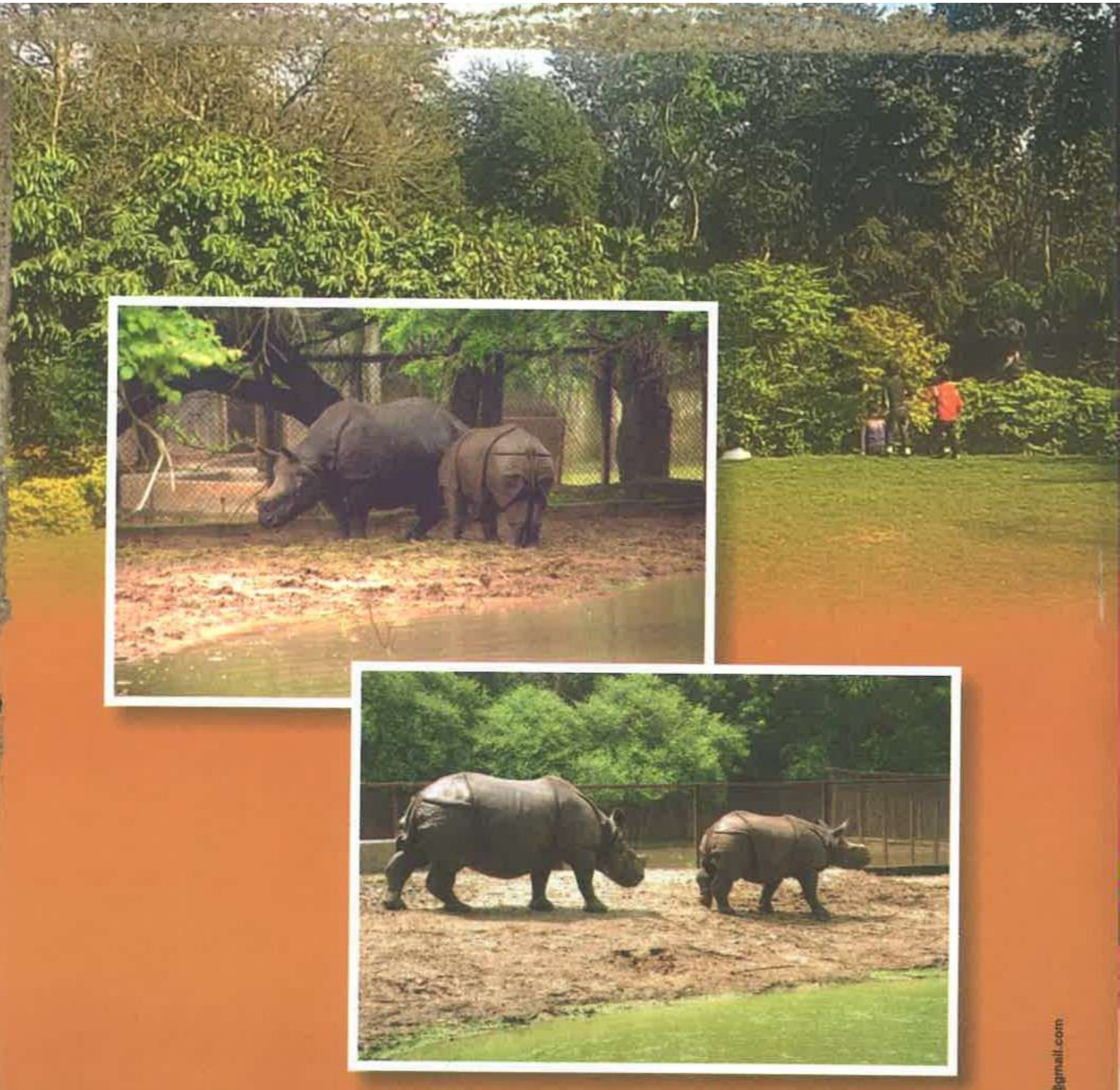

गैंडा

प्रकाशक :
संजय गाँधी जैविक उद्यान, पटना
P.O. - G.P.O., पटना-800 001 (बिहार)
सम्पर्क : 0612-2217455
ईमेल- patnazoo@yahoo.com
website - www.zoopatna.com

Diksha Art & Prints, Patna, #9431436534, dikshart2013@gmail.com

बिहार का राजकीय पक्षी गौरैया

दिखने में छोटी और मोटी सी, भूरे-भूरे रंगों वाली, छोटी पूँछ, लेकिन शक्तिशाली चोंच की मालकिन। घरों के बारामदों में इसकी चहचहाहट से ही 'गौरैया' के होने का आभास हो जाता है। इन्हें 'लिटिल ब्राउन जॉब्स' के नाम से भी जाना जाता है। कई प्रजातियों वाली यह पक्षी आमतौर पर आजादी (स्वतंत्रता) का प्रतीक मानी जाती है।

अक्सर गौरैयों को एक छोटी पक्षी मान लिया जाता है, लेकिन सच तो यह है कि वे बहुत हिम्मती होती है। आकार में छोटापन का इन्हें फायदा मिलता है। गौरैया अपने स्वभाव के अनुरूप घरों की खिड़कियों से प्रवेश करने की कोशिश करती है इस कवायद में सफलता के लिए वह खिड़कियों में शीशे पर प्रहार भी करती है और घरों में छोटी डंडियों से घोंसला बनाती है।

20 मार्च को 'विश्व गौरैया दिवस' घोषित किया गया, लेकिन कुछ लोगों के जेहन में यह सवाल उठता है कि सिर्फ गौरैया को लेकर ही ऐसा फैसला क्यों लिया गया। इसका जवाब लंबा और घुमावदार जरूर है, साथ ही दिलचस्प भी। गौरैया का वैज्ञानिक नाम 'पेसर डोमेस्टिक्स' दिया गया है। और इस प्रजाति की पक्षी का इंसानों के साथ पुराना और घनिष्ठ संपर्क रहा है। इसमें नर प्रजाति की गौरैया गहरे रंग वाली और काले विव वाली होती है, जबकि मादा प्रजाति की गौरैया सामान्यतया भूरे रंग की होती है।

यह अपने तरह की ऐसी अनोखी पक्षी है, जिसे गाँव और शहर में बच्चे पहली नजर में ही पहचान लेते हैं। स्वंयसेवकों और संगठनों द्वारा कई स्थानों पर कराई गई गिनती में एक डरावना निष्कर्ष सामने आया है, जो इस ओर इशारा करता है कि गौरैयों की संख्या में गिरावट आ रही है। इसे लुप्तप्राय प्रजातियों में शामिल किया गया है और ऐसा संभव भी है कि आने वाले समय में इस पक्षी के लिए हम 'एक समय की बात है' जैसे शब्दों का उपयोग करने लगें और यह किस्सागोई का हिस्सा भर रह जाए।

शहरी इलाकों में इसकी संख्या में ज्यादा गिरावट दर्ज की गई है। बिल्लियाँ और कौवे इन्हें अपना शिकार आसानी से बना रहे हैं। बाड़े और उद्यान की कमी से इनकी नस्ल नहीं पनप पा रही है। भोजन की कमी विशेष रूप से कीड़ों की कमी खतरे का सूचक हैं, क्योंकि ये युवा पक्षियों को बढ़ाने में सहायक होते हैं।

गौरैयों में आ रही गिरावट

गौरैया को दाना देकर, उनके लिए बाहर पानी की व्यवस्था कर, घर की स्थापना करके और इसे बढ़ावा देकर हम उनका संरक्षण कर सकते हैं। ऐसा होने पर वे सुरक्षित घोंसला बना सकेंगी। और उनकी मदद करके आप कहीं न कहीं से पर्यावरण की मदद कर रहे होते हैं। जाने अनजाने में आप नेचर हीरो बन जाते हैं। इसलिए उनके बुरे वक्त में इन बातों को ठंडे बस्ते में डालने का समय नहीं है, बल्कि आप उनकी सहायता करके उनके पंखों को नई उड़ान भरने में मदद कर सकते हैं।

- दिलचस्प बातें -

* गौरैया शिथिल पल्लिक होती हैं। नर और मादा दोनों हीं बच्चों का ख्याल रखते हैं। हालांकि मदाओं में यह सोच प्रबलता के साथ दिखाई देती है।

* आमतौर पर गौरेया जमीन पर घूमने के क्रम में फूदकती या कूदती है। उम्रदराज गौरैयों को ही बमुश्किल से चलते देखा जाता है।

* ये पक्षी आक्रामक और सामाजिक होते हैं। दूसरे पक्षियों से प्रतिस्पर्द्धा के कारण यह भूमीका और उभर जाती है।

* नर और मादा गौरैया में सबसे बड़ा अंतर यह होता है कि नर गौरैया का पीठ लाल होता है और उसपर काला विवहोता है, जबकि मादा गौरैया में आँख की पट्टी के साथ उसका रंग भूरा होता है। वे हर ब्रिडिंग सीज़न में मिलते हैं और फिर एक समूह में जीवन गुजारते हैं।

* गौरैया तीन घोंसलों में 3-5 अंड़े देती है। नर और मादा दोनों ही 12-15 दिनों तक अंड़ों को सेते (इंक्यूबेट) करते हैं। पक्षी के ये छोटे बच्चें 15 दिनों के बाद बाहर उड़ पाते हैं।

* नन्हें मेहमानों के लिए बिल्लियाँ मुख्य तौर पर खतरे का सूचक होती हैं। पक्षियों के घोंसले को छोड़ने के बाद बिल्लियाँ उन अनुभवहीन गौरैयों को अपना शिकार बना लेती हैं। हालांकि वे खतरे से बचने के लिए पानी में तैर सकती है, बावजूद इसके इन्हें जलीय पक्षियों में शामिल नहीं किया जाता हैं।

* यह पक्षी 12 साल तक जीवन जीते हैं। अभी तक सबसे ज्यादा कहीं भी जीने वाली गौरैया की अधिकतम उम्र 15 साल और 9 महीने दर्ज की गई है।

* गौरैया जब परेशान होती है, तो तनाव को कम करने के लिए अपने पूंछ को झटका देती है। 500 शोध पत्रों के माध्यम से इस प्रजाति पर वैज्ञानिक तरीके से अध्ययन करके इनके बारे में जानकारी प्रकाशित की गई है।

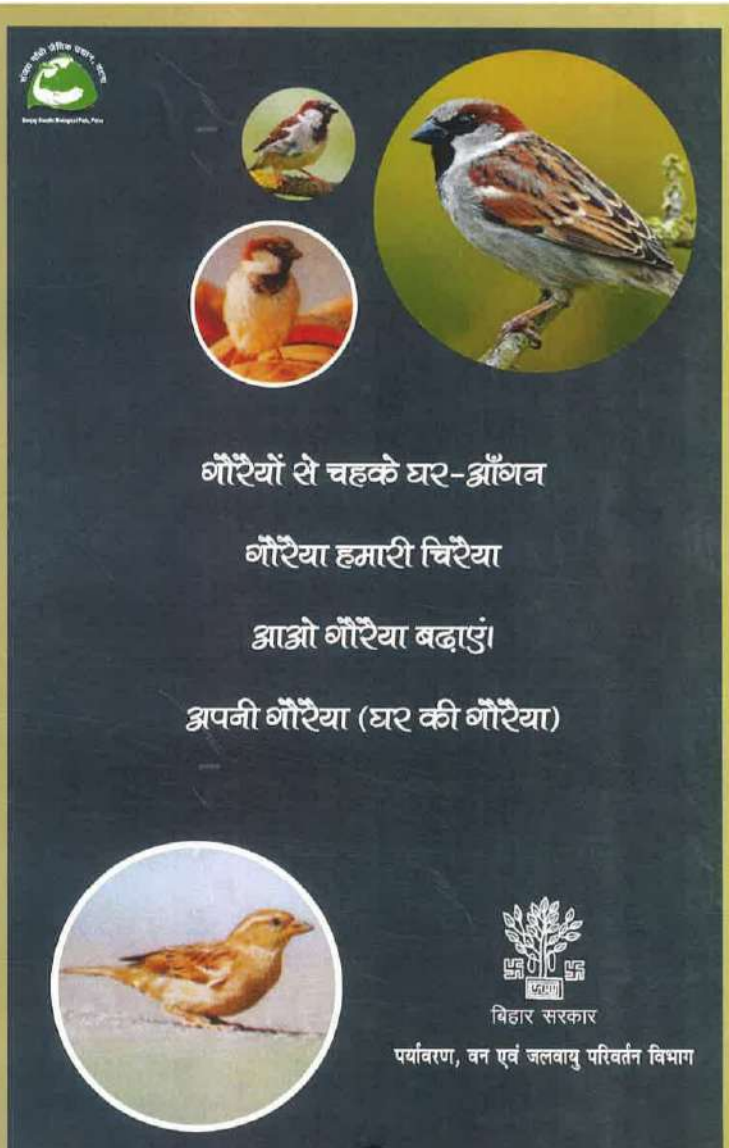

गौरैयों से चहके घर-आँगन

गौरैया हमारी चिरैया

आओ गौरैया बढ़ाएं।

अपनी गौरैया (घर की गौरैया)

बिहार सरकार
पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग

परिचय

153 एकड़ में फैले संजय गाँधी जैविक उद्यान, पटना की स्थापना वर्ष 1969 में हुई थी। इस उद्यान में 100 प्रजातियों के लगभग 1200 जानवर हैं। प्रत्येक वर्ष लगभग 18 लाख दर्शक इस जैविक उद्यान का भ्रमण करते हैं। यह उद्यान वन्यप्राणियों के संरक्षण के साथ-साथ दर्शकों में ज्ञान एवं जागरूकता पैदा करता है। यह उद्यान अत्यंत हरा-भरा है एवं लगभग 300 प्रजातियों के दस हजार से अधिक पेड़-पौधों का संरक्षण करता है।

दत्तकग्रहण क्यों करें?

वन्यप्राणी दत्तकग्रहण, वन्यप्राणियों के प्रति व्यक्तिगत स्नेह और समर्थन दिखाने का सबसे प्रभावी तरीका है। यह उद्यान लुप्तप्राय: प्रजातियों के अन्त:प्रजनन एवं अन्य ऐसे कार्यक्रमों में लगा है जिसे प्रबुद्ध एवं जागरूक लोगों के समर्थन की आवश्यकता है।

वन्यप्राणी प्रकृति के अनमोल उपहार हैं। मानवीय उपेक्षाओं एवं भूलों के कारण इनकी संख्या तेजी से घट रही है। वन्यप्राणियों का दत्तकग्रहण कर हम प्रकृति को संरक्षित एवं मानवीय मूल्यों की रक्षा कर सकते हैं।

वन्यप्राणी दत्तकग्रहण कैसे करें?

- गोद लेने वाले (दत्तकग्रहण करने वाले) व्यक्ति को आगे दी गई सूची से अपने पसंदीदा वन्यप्राणी को चुनना है।
- गोद लेने वाले व्यक्ति को समर्थन के स्तर का चयन करना है।
- गोद लेने वाले व्यक्ति को संलग्न प्रपत्र के साथ देय राशि को मेलबॉक्स में डालना है अथवा जैविक उद्यान निदेशक के कार्यालय में सीधे जमा करना है।
- गोद लेने वाले व्यक्ति दत्तकप्राणी को अपने मित्र, सम्बन्धी, माता-पिता अथवा बच्चों को उपहार कर सकते हैं।

वन्यप्राणी दत्तकग्रहण की कुछ मुख्य शर्तें

1. कोई भी व्यक्ति/परिवार/व्यक्ति-समूह/प्रतिष्ठान/संस्था या कम्पनी पूरे चिड़ियाघर के सभी पशु-पक्षियों (दत्तकग्रहण किए गए जानवरों को छोड़कर) को एक दिन के लिए दत्तक-ग्रहण कर सकता है।
2. किसी भी व्यक्ति/परिवार अथवा व्यक्ति-समूह द्वारा शेर, बाघ, तेंदुआ, हाथी, गैंडा इत्यादि का दत्तकग्रहण 6 माह या एक वर्ष के लिए हो सकता है, जबकि कोई संस्थान/प्रतिष्ठान या कम्पनी 1, 2, 3 या 5 वर्ष के लिए दत्तकग्रहण कर सकती है।
3. दत्तकग्रहणकर्त्ता को विनिर्दिष्ट राशि निदेशक, संजय गाँधी जैविक उद्यान के पक्ष में पटना में भुगतेय चेक/बैंकर्स चेक/डिमांड ड्राफ्ट के रूप में जमा करना होगा।

4. प्रत्येक दत्तकग्रहणकर्त्ता को एक दत्तकग्रहण कार्ड उपलब्ध कराया जाएगा।
5. उद्यान के सभी नियम/कानून दत्तकग्रहणकर्त्ता पर भी सामान्य रूप से लागू होंगे।
6. दत्तकग्रहणकर्ता को दत्तकग्रहण किए गए वन्यप्राणियों को बाहर ले जाने की अनुमति नहीं होगी और न ही इनके स्वामित्व का अधिकार होगा।
7. दत्तकग्रहणकर्त्ता को चिड़ियाघर के प्रबंधन में किसी प्रकार के हस्तक्षेप अथवा दबाव डालने का अधिकार नहीं होगा।
8. यदि दत्तकग्रहणकर्ता दत्तकग्रहण सम्बन्धी किसी नियम का उल्लंघन करेंगे तो उद्यान प्रशासन को दत्तकग्रहण की राशि बिना लौटाए उनके दत्तकग्रहण के अधिकार को रद्द करने का अधिकार होगा।
9. दत्तकग्रहण के लिए न्यूनतम राशि बीस हजार रुपये मात्र है।

योजना के तहत् दत्तकग्रहणकर्त्ता को दी जाने वाली कुछ विशिष्ट सुविधाएँ

- दत्तकग्रहणकर्त्ता को वन्यप्राणी दत्तकग्रहण का प्रमाणपत्र एवं जू-स्मारक दिया जाएगा।
- दत्तकग्रहणकर्त्ता का नाम प्रवेशद्वार/जानवरगृह के समीप पट्ट पर प्रदर्शित किया जाएगा।
- जू ओरिएंटेशन कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आमंत्रण-पास।
- चिड़ियाघर, शिशु उद्यान, मछलीघर एवं मिनी ट्रेन की निःशुल्क सुविधा (दत्तकग्रहण की पूरी अवधि में)।
- चिड़ियाघर खुलने की अवधि में निदेशक द्वारा आवंटित स्थल पर निर्धारित शर्तों के अधीन बिना नियमों के उल्लंघन के मिलन समारोह आयोजित करने की अनुमति।
- दत्तकग्रहणकर्त्ता का नाम चिड़ियाघर के वार्षिक प्रतिवेदन में भी सम्मिलित किया जाएगा।

कुछ मुख्य वन्यप्राणियों का दत्तकग्रहण शुल्क

योजना (क) व्यक्ति विशेष/परिवार अथवा व्यक्तियों के समूह (अधिकतम पाँच) के लिए

दत्तक-ग्रहण के लिए वन्यप्राणियों की सूची

क्रम सं.	नाम/वन्यप्राणी की प्रजाति (एक वन्यप्राणी के लिए दर)	छः माह (रु.)	एक वर्ष (रु.)
1.	हाथी	1,50,000	2,25,000
2.	जिराफ़	1,20,000	1,80,000
3.	गैंडा	1,00,000	1,50,000
4.	हिप्पोपोटोमस	1,00,000	1,50,000
5.	शेर	1,00,000	1,50,000
6.	बाघ	1,00,000	1,50,000
7.	हिमालयन भालू	50,000	75,000
8.	स्लोथ बेयर	50,000	75,000
9.	उद्‌बिलाव	50,000	75,000
10.	तेंदुआ	50,000	75,000
11.	जेबरा	50,000	75,000
12.	कैश्वरी	25,000	37,500
13.	गोल्डन कैट	20,000	30,000
14.	जंगल कैट	20,000	30,000
15.	लैपर्ड कैट	20,000	30,000

एक दिन के लिए पूरा चिड़ियाघर दत्तकग्रहण करने के लिए : उन जानवरों को छोड़कर जिनका दत्तकग्रहण अन्य योजनाओं में हो चुका है : **रु. 25,000 (पच्चीस हजार रुपए)।**

संजय गाँधी जैविक उद्यान
पटना

वन्यप्राणी दत्तकग्रहण आवेदन-प्रपत्र

1. व्यक्ति, परिवार, व्यक्ति-समूह, प्रतिष्ठान, संस्थान अथवा कम्पनी का नाम एवं पता:

2. चुने गए वन्यप्राणी/वन्यप्राणी इंक्लोजर का नाम:
(पूरा चिड़ियाघर दत्तकग्रहण की स्थिति में कृपया लिखें 'पूरा चिड़ियाघर')

3. दत्तकग्रहण की अवधि:

4. राशि:

5. भुगतान का तरीका:
चेक/ड्राफ्ट संख्या
बैंक का नाम

6. वन्यप्राणी इंक्लोजर अथवा प्रवेशद्वार के निकट पट्ट पर प्रदर्शित की जानेवाली सामग्री:

7. प्रवेश-पास, जिनके पक्ष में निर्गत करना है, उनका नाम:

8. सम्पर्क विवरणी (दूरभाष/मोबाइल/ई-मेल आई.डी.):

9. पैन/टैन संख्या:

मैं प्रमाणित करता/करती हूँ कि मैंने/हमने दत्तकग्रहण संबंधी सभी शर्तों एवं निर्देशों का पढ़ एवं समझ लिया है। मैं/हम सभी शर्तों एवं निर्देशों को स्वीकार करता/करती हूँ।

मैं उक्त दत्तकग्रहण ..... के नाम में करना चाहता/चाहती हूँ।

दिनांक:

स्थान: हस्ताक्षर

दत्तकग्रहण संबंधी विस्तृत जानकारी के लिए कृपया सम्पर्क करें:

उपनिदेशक, संजय गाँधी जैविक उद्यान, पटना
मोबाईल न. 9473199780
E-mail: aks1703@yahoo.com • Website: www.forest.bih.nic.in

संजय गाँधी जैविक उद्यान,
पटना

वन्यप्राणी दत्तकग्रहण योजना

Sanjay Gandhi Biological Park, Patna

CALL OF THE WILD

MAMMALS

SHAKTIRAJ: THE INDIAN RHINO

One-horned rhinoceros:
(Rhinoceros unicornis) is native to Indian sub-continent and it is the largest rhino species in the world.

Largest number of one-horned Rhinoceros are found in Assam.

FUN FACTS:

- The Indian rhinoceros has a single black horn made up of Keratin.
- Rhinos are great swimmers and on land can run up to 35 miles.
- Average lifespan of a rhino is 35-45 years.
- Indian Rhino grows to be 6 feet tall.

SHRISTI: THE AFRICAN GIRAFFE

Giraffe:
(Giraffa camelopardalis) is the tallest living animal having an average height of around 5 meters and it is the largest ruminant.

Giraffes are native of sub-Saharan region of Africa.

FUN FACTS:

- Giraffes only need 5 to 30 minutes of sleep in a 24-hours period.
- They can run as fast as 35 miles an hour over short distances.
- Giraffes are the tallest mammals on earth.
- Their legs alone are taller than 6 feet.

KARTIK: THE CHIMPANZEE

Chimpanzee:
(Pan) is our closest living relatives native to sub-Saharan Africa.

Chimpanzees are social animal and it is thought that human and Chimpanzees share a common ancestor.

FUN FACTS:

- Chimpanzees in captivity can understand human sign language.
- Chimpanzees are 6-7 times stronger than humans.
- They can live upto 50 years in wild.
- Chimpanzees can walk on two legs.

Sanjay Gandhi Biological Park has large collection of animals, it is a leading zoo in captive **RHINO** breeding and conservation in **ASIA** .....

ANIMAL SECTION:

01. WOLF
02. LEOPARD
03. VULTURE
04. CHIMPANZEE
05. LION
06. TIGERS
07. BEAR
08. SNAKEHOUSE
09. BAT CAVE
10. OSTRICH
11. WATER BIRDS
12. HOG DEER
13. BARKING DEER
14. EMU
15. CASSOWARY
16. TERRESTRIAL BIRD
17. PHEASANTS
18. OTTER
19. ZEBRA
20. SPOTTED DEER
21. SWAMP DEER
22. SMALL CATS
23. HIPPOPOTAMUS
24. BLACK BUCK
25. AQUARIUM
26. GIRAFFE
27. SAMBAR
28. RHINOCEROS
29. BISON (GAUR)
30. ELEPHANT
31. MUGGAR
32. GHARIAL

BOTANICAL SECTION:

1B. CACTUS HOUSE
2B. FERN HOUSE
3B. WATER GARDEN
4B. PALM GARDEN
5B. MEDICINAL PARK
6B. ROCK GARDEN
7B. CHILDRENS PARK
8B. ROSE GARDEN

ADMINISTRATION:

A. ADMIN OFFICE
K. KNOWLEDGE CENTRE
Q. ZOO QUARTERS
VH. ZOO HOSPITAL

P PARKING
SHADE
FOOD COURT
WASHROOM
WATER POINT